संपादन कला

संपादन का अर्थ –संपादन का सामान्य अर्थ है पूर्णता अर्थात किसी भी कार्य को पूरा करना| लेकिन प्रकाशन के सन्दर्भ में जब हम इस पर विचार करते है तो इसका सीधा अर्थ होता है जिस पुस्तक या समाचार को संशोधित कर मुद्रण या प्रसारण योग्य बनाना| इसमें सम्पादन की अहम भूमिका होती है| संपादक जितना सूझ-बूझ वाला या योग्य होगा सम्पादकीय या प्रकाशन उतना ही उम्दा होगा| इसमें शीर्षक से लेकर पृष्ठ सज्जा, छपाई, भाषा शैली तथा विचारों के स्पष्टीकरण पर विशेष ध्यान दिया जाता है| सम्पादक में इन तमाम बातों का ख्याल रखना होता है| संपादन एक श्रम साध्य एवं अभ्यास आधारित बौद्धिक कार्य है|

समाचार का संपादन निम्नलिखित प्रकार से किया जाता है –

- समाचार माध्यम की दृष्टि से संपादन
- समाचार तत्वों की दृष्टि से संपादन
- समाचार की दृष्टि से सम्पादन
- नैतिक संपादन
- तकनीकि संपादन

संपादन एक कला है। यह एक कठिन काम है। इसके लिए परिश्रम, अभ्यास, निपुणता की आवश्यकता होती है। संपादन का काम उत्तरदायित्वपूर्ण होता है। समाचार स्थानीय, प्रांतीय, राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय हुआ करते हैं, जिन्हें पढ़कर पाठक घटनाओं से परिचित होता है। संपादक प्रथम पृष्ठ से लेकर अंतिम पृष्ठ तक समाचार पत्र को विभिन्न तरीकों से सजाकर पेश करता है, जिनमें समाचार प्रमुख होते हैं। उनकी प्रस्तुति कलात्मकता से होती है।

संपादन कला के सिद्धांत में शीर्षकीकरण, पृष्ठ विन्यास, आमुख डिजाइन आदि प्रमुख होता है।

....00...00...

संपादन कला के सिद्धांत

1. शीर्षकीकरण,
2. पृष्ठ विन्यास/पृष्ठ सज्जा
3. मेकअप /आमुख डिजाइन आदि प्रमुख होता है।

शीर्षकीकरण - समाचार लेखन में शीर्षक को ही महत्वपूर्ण माना गया है। यह शीर्षक ही है, जो पाठकों को आकर्षित करता है और उन्हें सामग्री पढ़ने के लिए प्रेरित करता है। शीर्षक आकर्षक, संक्षिप्त और प्रभावी होना चाहिए। इसके लिए कुछ महत्वपूर्ण बातें निम्नलिखित हैं–

1. शीर्षक छोटा होना चाहिए।
2. शीर्षक सार्थक होना चाहिए।
3. शीर्षक सरल एवं स्पष्ट होना चाहिए।
4. शीर्षक में सम्पूर्ण समाचार का भावबोध कराने की क्षमता होनी चाहिए।
5. शीर्षक में प्रश्नवाचक भाव से बचा जाए।
6. शीर्षक आक्रामण हो।
7. शीर्षक में पक्षपात नहीं होना चाहिए।
8. शीर्षक की लम्बाई कम के कम रखी जाए।
9. शीर्षक में शब्दों का दोहराव नहीं होना चाहिए।
10. शीर्षक पाठकों की उत्सुकता को जगाने में सहायक हो।
11. शीर्षक समाचार पत्र के मेकअप और लेआउट को आकर्षक बनाने में भी सहायक होना चाहिए।
12. शीर्ष स्वतः पूर्ण होना चाहिए।
13. शीर्षक और समाचार में सामंजस्य होना चाहिए।
14. शीर्षक के अक्षर बड़े और चमकीले टाइप के होने चाहिए।
15. शीर्षक में सुविख्यात व्यक्ति के नाम, उपनाम का प्रयोग हो सकता है
16. शीर्षक में सुविख्यात व्यक्ति के नाम, उपनाम का प्रयोग हो सकता है
17. शीर्षक द्वियार्थक नहीं होना चाहिए।
18. यथासंभव शीर्षक और इण्ट्रो में मेल होना चाहिए।
19. शीर्षक में अंकों के उपयोग से बचें। आवश्यकता ही हो,तो अंकों को मूल रूप में न लिखकर सरलीकरण करते हुए लिखा जाए।

समाचार पत्रों में शीर्षक निर्माण की विशेष प्रक्रिया अपनाई जाती है। समाचार पत्रों में निम्नलिखित शीर्षक संरचनाओं का प्रयोग होता है।

अच्छा शीर्षक वही है जो पाठकों को समाचार तथा पढ़ने की तरफ प्रेरित करें, उनमें उत्सुकता जगाए अर्थात् कुछ न कहते हुए भी बहुत कह जाये।

शीर्षक के उद्देश्य–

शीर्षक का कार्य समाचार का मूल भाव बताना, रूचि के अनुसार समाचार खोजने में सहायता करना, समाचार को आकर्षक बनाना, पत्र के व्यक्तित्व को उभारना, पाठकों की संख्या में वृद्धि करना आदि समाचार के शीर्षकों के उद्देश्य होते हैं।

- **शीर्षक की भाषा –**

  शीर्षक की भाषा त्रुटि रहित होना चाहिए। शीर्षक में क्या कहा जा रहा है यह पूरी तरह 'न्यूज वैल्यू' होता है और इसके लिए प्रत्येक समाचार पत्र को सही एवं तटस्थ दृष्टि अपनानी चाहिए। अच्छा शीर्षक से तात्पर्य है बोलचाल की भाषा में लिखा जाना चाहिए, जिसे पाठक उंची आवाज में सुन सके या बाजार में चिल्लाकर बेच सके। शीर्षक की भाषा में समानार्थी एवं लघु शब्दों का प्रयोग होना चाहिए।

  जैसे – पाकिस्तान – पाक
  सोवियंत संघ – रूस
  बहुजन समाज पार्टी – बसपा
  भारतीय जनता पार्टी – भाजपा

- शीर्षकों में बड़े अंकों को प्रायः अक्षरों में लिखा जाता है।
- हिन्दी में मात्राओं का विशेष ध्यान रखना चाहिए।
- संयुक्ताक्षर जो अधिक जगह घेरते हैं उनसे बचना चाहिए जैसे द्व, रू,क्त, क्य आदि।
- कम शब्दों के संयोजन से बना शीर्षक अधिक लोकप्रिय होता है।

शीर्षक के प्रकार

प्रत्येक समाचार पत्र के अपने शीर्षक नियम होते हैं और अलग–अलग प्रकार के शीर्षकों का उपयोग किया जाता है। इन्हें किसी खास परिभाषाओं में बांधना भी संभव नहीं है। सामान्यतः शीर्षक निम्न प्रकार के प्रकार होते हैं–

1. पूर्णपाती शीर्षक
2. विलोम स्तूपी शीर्षक
3. सीढ़ीनुमा शीर्षक
4. विलोम सोपानी शीर्षक
5. आयताकार शीर्षक
6. कटि शीर्षक
7. ब्लॉक शीर्षक
8. कपाली शीर्षक
9. बैनर शीर्षक
10. स्काई लाइन शीर्षक
11. रॉकेट शीर्षक
12. विस्मयादिबोधक शीर्षक
13. आलंकारिक शीर्षक
14. प्रतीकात्मक शीर्षक

1. **पूर्णपाती शीर्षक–** इस तरह के शीर्षक एक लाइन के होते हैं और इन शीर्षकों में कम से कम शब्दों में लगभग पूरी बात कहने का प्रयास किया जाता है। कई बार ऐसे शीर्षकों में पूरा वाक्य भी लिख दिया जाता है। जैसे–

   अंधाधुंध ठंड ....

   किसानों की आय होगी दोगुनी ....

2. **विलोम स्तूपी शीर्षक –** यह शीर्षक पिरामिड के उलट रचना का आभास देने वाले शीर्षक को विलोम स्तूपी शीर्षक कहा जाता है। इस तरह के शीर्षक केवल एक कॉलम में ही उपयोग किए जाते हैं। एक से अधिक कॉलमों में विलोम स्तूपी का प्रयोग सिर्फ फीचर पृष्ठों में ही किया जाता है, समाचारों के साथ यह प्रयोग नहीं किया जाना चाहिए। अमेरिका और ब्रिटेन के समाचार पत्रों में इस प्रकार के शीर्षक का अधिक प्रयोग होता है।

3. **सीढ़ीनुमा शीर्षक** – सीढ़ियों की तरह नजर आने वाली बनावट के कारण इन्हें सोपानी या सीढ़ीनुमा शीर्षक नाम दिया गया है। ऐसे शीर्षक आम तौर पर तीन पंक्तियों के होते हैं, जिनमें पंक्ति छोटी, दूसरी उससे बड़ी और तीसरी पंक्ति दोनों पंक्तियों से भी बड़ी होती है जैसे –

समझौता एक्सप्रेस
और लाहौर बस सेवा को
तुरंत बंद करने का फैसला

4. **विलोम सोपानी शीर्षक–** ऐसे शीर्षकों में पहली पंक्ति सबसे बड़ी दूसरी उससे छोटी और तीसरी सबसे छोटी होती है। ऐसे शीर्षक भी आम तौर पर एक कॉलम में ही दिए जाते हैं और ये बाएं या दाएं तरफ से शुरु हो सकते हैं जैसे–

पाकिस्तान से राजनयिक
संबंध तोड़ने की
इच्छा नहीं

चीन के साथ किसी भी
स्थिति से निपटने को
भारत तैयार : रावत

epaper.punjabkesari.in/himachal-pradesh/2020-12-15/himachal-main#pages/4

बातों–बातों में

चीन के साथ किसी भी स्थिति से निपटने को भारत तैयार : रावत

'आश्रम वैब सीरीज' : बॉबी देओल और प्रकाश झा को नोटिस

सरकार ने चम्बा, मंडी, सोलन व शिमला के कई क्षेत्रों को किया प्लानिंग एरिया से बाहर

राज्य के अन्य जिलों से भी कुछ क्षेत्रों को किया जाएगा प्लानिंग एरिया से बाहर

5. **आयताकार शीर्षक** – शीर्षक को कभी कभी आयताकार स्वरूप भी दिया जा सकता है। इस तरह के शीर्षक आम तौर पर दो या तीन लाइनों के होते हैं और इनमें सभी लाइनें कॉलम की पूरी चौड़ाई तक बराबर फैली होती है।

उदाहरण–

निर्माणाधीन भवन में देर रात सेट्रिंग का काम कर रहे श्रमिक 33 केवी लाईन के संपर्क में आए, दो की मौत

कोरोना के बाद अब शीत लहर, अगले 3दिनों में 4 से 5 डिग्री तक गिरेगा पारा

'मोदी बोले–नए कृषि कानून रातों–रात नहीं आए, लंबे समय से की जा रही थी मांग'

कहा–समर्थन मूल्य न बंद होगा, न खत्म होगा; गुमराह करने वालों से रहें सतर्क किसान; हम संदेह दूर करने को तैयार

प्रधानमंत्री को पूर्ण राज्यत्व स्वर्ण जयंती समारोह में वर्चुअली शामिल होने का न्यौता

'11 दिन तक 1000 कि.मी. साइकिल चलाकर' बिहार से टिकरी बॉर्डर पहुंचा 60 साल का किसान

ए.डी.बी. प्रोजेक्ट, एयरपोर्ट व बल्क ड्रग फार्मा पार्क मामले पर चर्चा

6. **कटि शीर्षक** – कटि शीर्षक डमरू के आकार वाले होते हैं। इन श्रेणी के शीर्षक आजकल उपयोग में नहीं लाए जाते हैं। इधर समाचार पत्रों में इस श्रेणी के शीर्षक उपयोग में नहीं लाए जाते, लेकिन एक दशक पूर्व तक ऐसे शीर्षकों का कही कही उपयोग किया जाता था। ऐसे शीर्षक तीन लाइनों के हो सकते हैं और प्रत्येक लाइनों पंक्ति का गठन इस प्रकार का होता है कि पहली और तीसरी लाईन बड़ी तथा दूसरी लाईन छोटी होती है।

सुप्रीम कोर्ट ने अवमानना याचिका पर सभी राज्य सरकारों को भेजा नोटिस

मादक पदार्थो की तस्करी करने वाले आरोपी की जमानत याचिका खारिज

पटसारी पुल के पास मिला शव

सर्कल रेट किए जाएंगे रिवाइज

ऑनलाइन कंपनी से ईनाम मिलने के नाम पर महिला से ठगी

WEEKEND Offer
OFFER VALID FROM 18th-20th Dec Only
BUY 1 GET 1

7. **ब्लॉक शीर्षक** – यह शीर्षक लेखन की एक नई विधि हैं, जिसे हाल के दौर में कुछ समाचार पत्रों ने अपनाया है। इसमें मुख्य शीर्षक के साथ–साथ समाचार के ठीक मध्य में समाचार सार भी दिया जाता है और इसे एक बॉक्स या ब्लॉक के रूप में प्रस्तुत किया जाता है। इसीलिए ऐसे शीर्षकों को ब्लॉक शीर्षक की श्रेणी में रखा जाता है, जैसे

दैनिक भास्कर

Leave No One Behind

WE ARE PROUD SUPPORTER OF SDG's MOVEMENT

ट्रंप और मोदी के बीच होगी वार्ता

—

8. **कपाली शीर्षक -** अंग्रेजी में इसे सब हैंडिंग भी कहते हैं। इसके तहत मुख्य शीर्षक के ऊपर बाएं कोने में एक उप शीर्षक दिया जाता है। कपाली शीर्षक का उपयोग 3 या 4 कॉलम के एक पंक्ति के शीर्षकों के साथ किया जाता है। कई बार उप शीर्षक के नीचे रूल का उपयोग भी किया जाता है। कभी कभी उप शीर्षक मुख्य शीर्षक के दोनों तरफ अर्थात् दाएं और बाएं भी दिया जा सकता है, जैसे –

..............................शाम को आसमान में दिखेगा अनोखा नजारा

800 साल बाद आज बेहद करीब होंगे बृहस्पति –शनि

शाम को आसमान में दिखेगा अनोखा नजारा

800 साल बाद आज बेहद करीब होंगे बृहस्पति-शनि

9. **बैनर शीर्षक–** समाचार पत्र के नामपट्ट मास्टहैड के ठीक नीचे पूरे आठ कॉलम में, मोटे टाइप में दिए जाने वाले शीर्षक को बैनर हैडलाइन यानी पताका शीर्षक कहते हैं। विशेष अवसरों पर, बड़ी तथा सनसनीखेज खबरों के साथ ही बैनर शीर्षक का उपयोग किया जाता है। चूंकि बैनर शीर्षक पाठकों के लिए स्तब्धकारी और चौंकाने वाले होते हैं, इसलिए अच्छी तरह विचार करने के उपरांत ही इनका उपयोग करना चाहिए। घटना, प्रसंग महत्वपूर्ण हो, दीर्घावधि के महत्व वाले हों तभी बैनर का उपयोग किया जाए।

बैनर शीर्षक के उदाहरण–

जय श्रीराम के नारों के बीच ममता के गढ़ में गरजे केंद्रीय गृहमंत्री शाह

विधानसभा चुनाव में भाजपा जीती तो बंगाल के सपूत को सौंपा जाएगा प्रदेश सरकार का नेतृत्व

कहा, ऐसा रोड शो जीवन में पहले नहीं देखा बदलाव चाहता है पश्चिम बंगाल

बंगाल के लोग अब राजनीतिक हिंसा और भ्रष्टाचार से मुक्ति चाहते हैं

बांग्लादेशी घुसपैठिए पश्चिम बंगाल की सबसे बड़ी समस्या इसे संगठित रूप से प्रोत्साहन दे रही हैं मुख्यमंत्री ममता

लोग दीदी की तानाशाही से तंग आ चुके हैं, खोज रहे हैं उचित विकल्प

10. स्काई लाइन शीर्षक– यह समचार पत्र में सबसे उपर होता है। समाचार पत्र के मास्टहैड से भी उनी यदि कोई शीर्षक दिष जाए तो उसे स्काई लाइन अथवा गगन रेखा शीर्षक कहते हैं। बहुत असाधारण परिस्थितियों में ही इस शीर्षक का उपयोग किया जाता है। यह शीर्षक अत्यंत महत्वपूर्ण होता है। समाचार पत्र का नाम आदि सब कुछ इसके सामने महत्वहीन हो जाता है। जैसे– समाचार पत्र के नाम के ऊपर जो लाईन लिखी जाती है।

....

11 रॉकेट शीर्षक – इस प्रकार के शीर्षक प्रहारात्मक और अत्यंत प्रभावी होते हैं, इसलिए इन्हें रॉकेट शीर्षक कहा जाता है। ऐसे शीर्षक एक या दो शब्दों के ही होते हैं और इनका उपयोग पहले पृष्ठ पर ही किया जाता है। राकेट शीर्षक समाचार का ही एक अभिन्न अंग होता है। यह शीर्षक त्वरित गति से प्रहार करने वाला होता है। इसमें कई साइज के टाइपों का प्रयोग किया जाता है। एक के बाद एक क्रमशः टाइप का फॉण्ट छोटा होता जाता है। जैसे –

.... **हमला**

.... **जंग छिड़ी**

.... **आक्रमण**

.... **काबूल आजाद**

12. विस्मयादिबोधक शीर्षक– इस शीर्षक की विशेषता है कि ये मानवीय दिलचस्पी से जुड़े हुए होते हैं तथा उत्सुकता जगाने वाले शीर्षक होते हैं। आश्चर्यजनक, विचित्र, विषयवस्तु के समाचारों के साथ विस्मयादिबोधक !चिह्न वाले शीर्षक होते हैं।

जैसे – **कंधार पर शकुनि का साया !**

13. आलंकारिक शीर्षक– अलंकारों ,उपमाओं से युक्त शीर्षकों को अलंकारिक शीर्षक कहा जाता है। किन्हीं विशिष्ट समाचारों में सीधे–सीधे शीर्षक देने की बजाय पाठकों की उत्सुकता को जगाने के लिए अलंकारिक शीर्षकों का उपयोग किया जाता है। ऐसे शीर्षक यदा कदा ही प्रयुक्त किए जाने चाहिए।

उदाहरण – **शाही शौक फुटपाथ पर**

14. प्रतीकात्मक शीर्षक– शीर्षक लेखन की यह भी एक नई विधा है। इसमें सपाट और सीधे शीर्षक की बजाय विशिष्ट प्रतीकों के जरिए बात कहने का प्रयास किया जाता है। जैसे–

बुद्ध फिर मुस्कराए

महानगर नई दिल्ली रविवार 31 मई, 2020, रु. 5.00 (10 पेज) दिल्ली, कोलकाता, लखनऊ और चंडीगढ़ से प्रकाशित

जनसत्ता

jansatta.com | epaper.jansatta.com | facebook.com/jansatta | twitter.com/jansatta

विश्व स्वास्थ्य संगठन से अमेरिका ने रिश्ते खत्म किए

वाशिंगटन, 30 मई (भाषा)।

अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्लूएचओ) के साथ सभी संबंध समाप्त करने की घोषणा की है। उन्होंने कहा कि डब्लूएचओ उन सुधारों को आगे नहीं बढ़ा पाया जिनकी बेहद जरूरत थी। इसके साथ ही उन्होंने आरोप लगाया कि जब चीन से कोरोना विषाणु फैलना शुरू हुआ, तो डब्लूएचओ ने दुनिया को इस बारे में गुमराह किया।

ट्रंप ने आरोप लगाया कि डब्लूएचओ कोरोना वायरस महामारी की जिम्मेदारी चीन पर डालने में विफल रहा।

ट्रंप ने शुक्रवार को चीन को 'दंडित' करने के उपायों की घोषणा करते हुए कहा, "डब्लूएचओ पर चीन का पूरा नियंत्रण है।"

ट्रंप ने संबंध समाप्त करने की घोषणा की

अमेरिकी राष्ट्रपति ने कहा, "चूंकि ये बेहद जरूरी सुधारों को आगे नहीं बढ़ा पाए, ऐसे में हम आज से विश्व स्वास्थ्य संगठन से सभी संबंध समाप्त कर रहे हैं और उसके दिए जाने वाले कोष को अन्य वैश्विक और जिम्मेदार संगठनों को स्थानांतरित करेंगे।" ट्रंप ने कहा, "दुनिया चीन से इस विषाणु पर जवाब चाहती है। इस मामले में पारदर्शिता होनी चाहिए।"

उन्होंने कहा कि चीन ने एक ऐसी वैश्विक महामारी फैलाई है जिसमें एक लाख से अधिक अमेरिकियों की जान गई है। राष्ट्रपति ने चीन पर आरोप लगाया कि वह डब्लूएचओ पर दबाव डाल रहा है जिससे बाकी पेज 8 पर

निषिद्ध क्षेत्रों में 30 जून तक बढ़ी पूर्णबंदी, आठ से खुलेंगे धार्मिक स्थल, होटल, रेस्तरां, मॉल

पहले दौर की रियायतों से लौटेगी रौनक

जनसत्ता ब्यूरो
नई दिल्ली, 30 मई।

केंद्रीय गृह मंत्रालय ने शनिवार को देश के निषिद्ध क्षेत्रों में राष्ट्रव्यापी पूर्णबंदी 30 जून तक बढ़ाने की घोषणा की। साथ ही कहा कि आठ जून से धार्मिक स्थलों, आतिथ्य सत्कार (हॉस्पिटैलिटी) सेवाओं, होटलों, सैलून और शॉपिंग मॉल को खोलने की अनुमति होगी। दो गज दूरी और मास्क पहनना जरूरी होगा। कर्फ्यू का समय भी बदल गया है। देश में रात का कर्फ्यू अभी भी जारी रहेगा। इसके लिए समय में बदलाव किया गया है। अब रात नौ बजे से सुबह पांच बजे तक गैर जरूरी काम से बाहर निकलने पर रोक रहेगी। पूर्णबंदी 4.0 तक यह समय शाम सात बजे से सुबह सात बजे तक था।

सरकार ने नए दिशानिर्देशों को पूर्णबंदी हटाने का प्रथम चरण (अनलॉक-1) बताया। **निषिद्ध** क्षेत्रों से बाहर लगी पाबंदियां एक जून से चरणबद्ध हटेंगी। **कर्फ्यू** का समय अब रात नौ से सुबह पांच बजे तक।

केंद्र ने पूर्णबंदी में और अधिक छूट संबंधी शनिवार को जारी नए दिशानिर्देशों को पूर्णबंदी हटाने का प्रथम चरण (अनलॉक 1) बताया है। देश में 25 मार्च से जारी राष्ट्रव्यापी पूर्णबंदी का चौथा चरण 31 मई को खत्म हो रहा है। नए दिशा-निर्देशों में केंद्रीय गृह मंत्रालय ने कहा कि निषिद्ध क्षेत्रों से बाहर जिन गतिविधियों पर पाबंदी लगी थी, उन्हें एक जून से चरणबद्ध तरीके से शुरू किया जाएगा। शनिवार को जारी दिशा-निर्देश में कर्फ्यू का समय बदल कर रात नौ बजे से सुबह पांच बजे तक कर दिया गया है। इस दौरान आवश्यक सेवाओं से जुड़े लोगों के अलावा देशभर में अन्य लोगों के बाहर निकलने पर पाबंदी होगी।

गृह मंत्रालय ने कहा है कि पूर्णबंदी का चौथा चरण रविवार को समाप्त हो रहा है, लेकिन यह निषिद्ध क्षेत्रों में 30 जून तक प्रभावी रहेगी। इस बात का खास ध्यान रखा जाएगा कि निषिद्ध क्षेत्र में लोगों की गतिविधियां न बढ़ें। इस क्षेत्र में घर-घर जाकर जांच होगी। निषिद्ध क्षेत्र के बाहर ऐसे इलाकों, जहां संक्रमण की आशंका है, वहां जिला प्रशासन अपने विवेकानुसार पाबंदियां लगा सकता है। सार्वजनिक धार्मिक स्थलों, होटलों, रेस्तरां, शॉपिंग मॉल और अन्य आतिथ्य सत्कार सेवाएं आठ जून से शुरू हो जाएंगी। हालांकि अंतरराष्ट्रीय हवाई यात्रा, मेट्रो ट्रेनों, सिनेमा हॉल, जिम, राजनीतिक सभाओं आदि को शुरू करने का निर्णय परिस्थितियों का आकलन करने के बाद लिया बाकी पेज 8 पर

खास बातें

पहला चरण
आठ जून से धार्मिक स्थल, होटल, रेस्तरां, शॉपिंग मॉल शर्तों के साथ खोले जाएंगे।

दूसरा चरण
स्कूल-कॉलेज और शैक्षणिक संस्थान खुलेंगे। राज्य सरकारें स्कूलों और बच्चों के माता-पिता से बात कर के स्कूल-कॉलेज खोलने पर फैसला कर सकती हैं। जुलाई में ये तय होगा कि स्कूल खोलने हैं या नहीं।

तीसरा चरण
अंतरराष्ट्रीय उड़ानें, मेट्रो रेल, सिनेमा हॉल, जिम, स्वीमिंग पूल, मनोरंजन पार्क, थिएटर, प्रेक्षागृह, शराबखाने और अन्य सार्वजनिक स्थलों को खोलने पर विचार होगा।

पटना रेलवे स्टेशन पर शनिवार को ट्रेन पर चढ़ते लोग।

राज्य करेंगे फैसला

राज्य सरकारों को फैसला करने का अधिकार बढ़ाया गया है। राज्य सरकारें ही तय करेंगी कि कैसे राज्यों में बसें और मेट्रो सेवाएं शुरू होंगी। केंद्र सरकार ने तो प्रतिबंध हटा लिया है, लेकिन राज्य सरकार अपने स्तर पर पाबंदियां लगा सकती हैं

पंजाब, बंगाल और मध्य प्रदेश में बढ़ी पूर्णबंदी

जनसत्ता ब्यूरो
नई दिल्ली, 30 मई।

केंद्र द्वारा छूट की घोषणा के साथ ही कई राज्यों ने अपने यहां पूर्णबंदी बढ़ाने का फैसला किया है। पंजाब, मध्य प्रदेश और पश्चिम बंगाल ने पूर्णबंदी बढ़ाने का एलान किया है। भारतीय जनता पार्टी शासित मध्य प्रदेश और तृणमूल कांग्रेस शासित पश्चिम बंगाल में 15 जून तक और कांग्रेस शासित पंजाब में चार हफ्ते के लिए इसे बढ़ाया गया है। हिमाचल प्रदेश सरकार ने कहा है कि राज्य में एक जून से यात्री बसें चलेंगी।

हिमाचल में एक जून से चलेंगी यात्री बसें

पंजाब के मुख्यमंत्री अमरिंदर सिंह ने शनिवार को पूर्णबंदी की अवधि एक महीने के लिए बढ़ा कर 30 जून तक कर दी। विशेषज्ञों की सलाह के आधार पर उन्होंने यह फैसला किया है। एक सरकारी वक्तव्य के मुताबिक अमरिंदर सिंह ने स्वास्थ्य विशेषज्ञों और मंत्रिमंडल के मंत्रियों के साथ वीडियो कॉन्फ्रेंस के जरिए हुई बैठक में कोविड-19 की स्थिति की समीक्षा करने के बाद यह निर्णय लिया।

अपने साप्ताहिक फेसबुक संबोधन के दौरान मुख्यमंत्री ने कहा कि कोविड-19 का खतरा अभी टला नहीं है और यदि आवश्यक हुआ तो लोगों का जीवन बचाने के लिए बाकी पेज 8 पर

एक दिन में सबसे अधिक स्वस्थ, सबसे ज्यादा संक्रमित; सर्वाधिक मौत

जनसत्ता ब्यूरो
नई दिल्ली, 30 मई।

देश में एक दिन में कोरोना विषाणु संक्रमण के रिकॉर्ड 11,264 मरीज ठीक हुए हैं। अब तक स्वस्थ होने वाले मरीजों की संख्या 82,369 तक जा पहुंची है। इस वजह से मरीजों के ठीक होने की दर 47.40 फीसद हो गई है। इसमें 4.51 फीसद की वृद्धि हुई है। संक्रमण के मामलों में भी 7,964 की बढ़ोतरी दर्ज की गई है जो अब तक की सबसे अधिक है। इसके साथ ही देश में कुल संक्रमितों की संख्या 1,73,763 हो गई है। चौबीस घंटे के दौरान 265 मरीजों की मौत की पुष्टि हुई है और यह भी आज तक की सबसे अधिक बढ़ोतरी है। मरने वालों की कुल संख्या 4,971 तक पहुंच गई है। देश में सक्रिय मरीजों की संख्या 86,422 है। वहीं, जॉन हॉपकिंस विश्वविद्यालय की ओर से रात 11:00 बजे जारी आंकड़ों के मुताबिक संक्रमितों की संख्या 1,81,401 और मृतकों की संख्या 5,170 तक पहुंच गई थी।

11 हजार से अधिक मरीज हुए ठीक चौबीस घंटे में। **7,964** बढ़ी संक्रमितों की संख्या, कुल संक्रमण के मामले 1,73,763 पहुंचे **मरने** वालों की संख्या 4971, **एक दिन** में 265 मौतों की पुष्टि।

केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्रालय की ओर से शनिवार सुबह आठ बजे जारी आंकड़ों के मुताबिक चौबीस घंटे में मरने वालों में महाराष्ट्र के 116, दिल्ली बाकी पेज 8 पर

15.4 दिन में मामले हो रहे दोगुने

जनसत्ता ब्यूरो
नई दिल्ली, 30 मई।

केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्रालय के मुताबिक 14 दिन की अवधि में मामलों के दोगुना होने की दर शनिवार को 13.3 दिन रही जबकि तीन दिन की अवधि में यह दर 15.4 दिन हो गई। इस समय मृत्यु दर 2.86 फीसद है।

शुक्रवार को 2.55 फीसद सक्रिय रोगी आइसीयू में, 0.48 फीसद वेंटिलेटर पर और 1.96 फीसद सक्रिय बाकी पेज 8 पर

पायलट को कोरोना, आधे रास्ते से लौटा विमान

जनसत्ता ब्यूरो
नई दिल्ली, 30 मई।

दिल्ली से मास्को जा रहे एअर इंडिया के एक विमान को शनिवार को आधी दूरी से लौटना पड़ा, जब विमानन कंपनी की ग्राउंड टीम को पता चला कि विमान का एक पायलट कोरोना विषाणु से संक्रमित है। उस वक्त उड़ान उज्बेकिस्तान तक पहुंची थी।

दरअसल, उड़ान से पहले पायलट की कोरोना रिपोर्ट जांची जाती है। स्टाफ ने गलती से पॉजिटिव को नेगेटिव पढ़ दिया और पायलट को मॉस्को के लिए रवाना कर दिया। यह उड़ान वंदे भारत मिशन के तहत मॉस्को में फंसे भारतीयों को लेने जा रही थी। इसलिए उस दौरान इसमें सिर्फ क्रू मेंबर थे और कोई यात्री नहीं था। यात्रियों को मॉस्को से चढ़ना था।

अधिकारियों ने कहा, "विमान को तत्काल वापस बुला लिया गया। वह शनिवार को दोपहर साढ़े बारह बजे के आसपास दिल्ली पहुंचा।" चालक दल के सदस्यों को एकांतवास में रखा गया है। मास्को में बाकी पेज 8 पर

पायलट की कोरोना रिपोर्ट में गलत पढ़ लेने की मानवीय भूल। **गलती** का पता चलते ही उड़ान को वापस बुलाया गया। **खाली** भेजा गया यह विमान तब उज्बेकिस्तान तक पहुंचा था।

भारत में रेमडेसिविर की बिक्री के लिए मांगी कंपनी ने इजाजत

नई दिल्ली, 30 मई (भाषा)।

अमेरिकी दवा कंपनी गिलीड साइंसेज ने अपनी वायरल रोधी दवा रेमडेसिविर को भारतीय बाजार में बेचने की अनुमति के लिए भारत के केंद्रीय औषधि मानक नियंत्रण संगठन (सीडीएससीओ) को आवेदन दिया है। इस दवा को कोविड-19 के उपचार में अहम बताया जा रहा है।

सूत्रों के अनुसार दवा का पेटेंट रखने वाली इस कंपनी ने रेमडेसिविर के लिए क्लीनिकल-पूर्व और क्लीनिकल अध्ययन के बारे में डेटा पूरा कर लिया है। एक सूत्र ने कहा, "कंपनी ने वायरल रोधी दवा रेमडेसिविर को भारतीय बाजार में बेचने की अनुमति के लिए भारत के केंद्रीय औषधि मानक नियंत्रण संगठन (सीडीएससीओ) को आवेदन दिया है।

सीडीएससीओ विशेषज्ञ समिति की मदद से आवेदन का अध्ययन करेगा। यह विशेषज्ञ समिति की सिफारिशों के आधार पर अंतिम निर्णय लेगा। अमेरिकी खाद्य और औषधि प्रशासन (एफडीए) ने अस्पतालों में भर्ती कोविड-19 के मरीजों के इलाज के लिए इस दवा को आपातकालीन उपयोग के लिए स्वीकृति दी है। सूत्रों ने बताया कि जापान के बाकी पेज 8 पर

अमेरिकी कंपनी ने आवेदन ऐसे समय में किया है जब दो भारतीय कंपनियों- सिप्ला और हीटीरो लैब्स ने भारत में रेमडेसिविर के उत्पादन और बिक्री की अनुमति के लिए दवा नियामक के पास आवेदन किया है। एक अधिकारी ने बताया कि इन कंपनियों ने रेमडेसिविर के लिए चिकित्सीय परीक्षण से छूट की मांग की है ताकि रोगियों के लिए तेजी से दवा उपलब्ध कराई जा सके। अधिकारी के अनुसार उनके आवेदन अभी विचाराधीन हैं।

मौसम विभाग ने कहा

केरल में मानसून की दस्तक पांच जून को

जनसत्ता संवाददाता
नई दिल्ली, 30 मई।

दक्षिण पश्चिमी मानसून ने केरल तट पर दस्तक दे दी है। हालांकि अभी इस खबर पर भारतीय मौसम विभाग की मुहर नहीं लगी है लेकिन विभाग का कहना है कि परिस्थितियां मानसून के केरल पहुंचने के अनुकूल हैं।

यह अभी अरब सागर में है और आगे बढ़ रहा है। कई कम दबाव के क्षेत्र भी बने हैं। वहीं दिल्ली में शनिवार को बारिश तो नहीं हुई लेकिन

भीषण गर्मी का सामना करना रहे लोगों को गर्मी से राहत मिली। दिन का तापमान 34.8 डिग्री दर्ज किया गया। अच्छी खबर यह भी है कि जल्दी ही मानसून पूर्व हलचल शुरू हो जाएगी।

निजी वेबसाइट स्काइमेट के अनुसार दक्षिण पश्चिम मानसून ने केरल तट पर दस्तक दे दी है। हालांकि भारतीय मौसम विभाग की ओर से जारी बयान में कहा गया है कि मानसून अरब सागर में आगे बढ़ रहा है।

विभाग ने पांच से छह जून के बीच मानसून के केरल पहुंचने का आकलन किया था जिसे तूफान अम्फान से भी गति मिलने की संभावना थी। अगले चौबीस बाकी पेज 8 पर

कुलगाम में मुठभेड़, दो आतंकी ढेर

जनसत्ता ब्यूरो
नई दिल्ली, 30 मई।

जम्मू कश्मीर के कुलगाम जिले में शनिवार को सुरक्षाबलों के साथ मुठभेड़ में दो आतंकवादी मारे गए। सैन्य प्रवक्ता के मुताबिक, दक्षिण कश्मीर के इस जिले के वानपुरा इलाके में आतंकवादियों की मौजूदगी की सूचना मिलने के बाद इलाके की घेराबंदी की गई और तलाश अभियान चलाया गया। सेना के चिनार कोर के प्रवक्ता ने कहा, आतंकवादियों ने सुरक्षाबलों पर गोलियां चलाईं जिसके बाद जवाबी कार्रवाई की गई। मुठभेड़ में दो आतंकवादी ढेर हो गए। अभी आतंकवादियों की पहचान नहीं हो सकी है और यह भी पता नहीं चला है कि वे किस समूह से जुड़े हुए थे। इलाके में तलाशी अभियान चल रहा है।

घेराबंदी करने के बाद सेना ने आत्मसमर्पण करने को कहा, नहीं मानने पर मुठभेड़ में मार गिराया

मुठभेड़ के दौरान सेना ने आतंकियों को बार-बार हथियार डालने को कहा, लेकिन जब वह नहीं माने तो सेना ने दोनों को मार गिराया। मुठभेड़ में पुलिस, सेना और सीआरपीएफ ने साथ मिलकर कार्रवाई की। घेराबंदी करने पर सेना ने लाउडस्पीकर के जरिए बार-बार बाकी पेज 8 पर

खनन पट्टों में गड़बड़ी पर बिफरे गोवा के लोकायुक्त | पार्टी मोह पर वार | महाभारत के चरित्र उद्धृत करते हुए जताई नाराजगी

इन दिनों धृतराष्ट्रों या गांधारी की कोई कमी नहीं

पणजी, 30 मई (भाषा)।

राज्यपाल को एक चिट्ठी लिख कर, गोवा के लोकायुक्त ने खनन पट्टों के नवीनीकरण में कथित अनियमितताओं को लेकर पूर्व मुख्यमंत्री लक्ष्मीकांत पारसेकर और अन्य दो के खिलाफ मामला नहीं दर्ज करने पर राज्य सरकार के प्रति असंतोष जताया है। राज्यपाल सत्यपाल मलिक को लिखे पत्र में लोकायुक्त ने महाकाव्य महाभारत के चरित्रों को उद्धृत करते हुए कहा कि सरकार प्रभावशाली और शक्तिशाली लोगों को बचा रही है।

लोकायुक्त ने आरोप लगाया है कि खनन पट्टों के नवीनीकरण में भ्रष्टाचार और आपराधिक साजिश रची गई है। हालांकि, गोवा सरकार ने लोकायुक्त द्वारा आरोपी बनाए जाने के बावजूद तीनों के खिलाफ मामला दर्ज नहीं किया। गोवा के लोकायुक्त सेवानिवृत्त न्यायमूर्ति पीके मिश्रा ने पत्र में कहा कि 12 जनवरी, 2015 को जो कुछ भी हुआ, उसे केवल धृतराष्ट्र या गांधारी ही नहीं देख पाते। ऐसा लगता है कि इन दिनों धृतराष्ट्रों या गांधारी की मेरे भारत महान में कोई कमी नहीं है।

उन्होंने लिखा, "उस मामले में भी, ऐसा लगता है कि उचित सलाह देने में शकुनियों की कोई कमी नहीं है। लोक प्रशासन में 'पुत्र मोह' का स्थान 'पार्टी मोह' या अन्य प्रकार के 'मोह' (लालच) ने ले लिया है। केवल भ्रष्टाचार खत्म करने की बात की जा रही है, वास्तव में भ्रष्टाचार खत्म करने के लिए केवल बातें ही हो रही हैं।" लोकायुक्त ने कहा कि प्रभावशाली तथा शक्तिशाली लोगों के बचाव की आम परिपाटी को देखते हुए रिपोर्ट को अस्वीकार करने की उम्मीद पहले से ही थी।

इस साल जनवरी में गोवा के लोकायुक्त ने राज्य सरकार से पूर्व मुख्यमंत्री लक्ष्मीकांत पारसेकर, तत्कालीन खनन सचिव पवन कुमार सैन और खान एवं भूगर्भ विभाग के पूर्व निदेशक प्रसन्ना आचार्य के खिलाफ गैर कानूनी रूप से लौह अयस्क खनन का पट्टा नवीनीकृत करने के मामले में भ्रष्टाचार निरोधी ब्यूरो (एसीबी) के जरिए प्राथमिकी दर्ज करने की अनुशंसा की थी। कड़े शब्दों का इस्तेमाल करते हुए लोकायुक्त ने कहा, 'संस्थान मुख्यमंत्री और राज्यपाल द्वारा जमा की गई कार्रवाई रिपोर्ट (एटीआर) में दिए गए कारणों से संतुष्ट नहीं है और मामले की गंभीरता को देखते हुए धारा-16(3) के तहत रिपोर्ट की जरूरत है। उन्होंने कहा कि दोनों एटीआर महाधिवक्ता और प्रत्यक्ष और परोक्ष सलाहकारों की सलाह है तथा एक तरह की है।लोकायुक्त ने कहा कि बाकी पेज 8 पर

रविवारी
31 मई 2020
रविवारी के स्तंभ आज पढ़ें पेज 7 पर

कई शकुनि भी यहां

गोवा के लोकायुक्त ने आरोप लगाया है कि खनन पट्टों के नवीनीकरण में भ्रष्टाचार और आपराधिक साजिश रची गई है। हालांकि, राज्य सरकार ने लोकायुक्त द्वारा आरोपी बनाए जाने के बावजूद तीनों के खिलाफ मामला दर्ज नहीं किया। लोकायुक्त सेवानिवृत्त न्यायमूर्ति पीके मिश्रा ने पत्र में कहा कि 12 जनवरी, 2015 को जो कुछ भी हुआ, उसे केवल धृतराष्ट्र या गांधारी ही नहीं देख पाते। उन्होंने लिखा, 'उस मामले में भी, ऐसा लगता है कि उचित सलाह देने में शकुनियों की कोई कमी नहीं है। लोक प्रशासन में 'पुत्र मोह' का स्थान 'पार्टी मोह' या अन्य प्रकार के 'मोह' (लालच) ने ले लिया है।